आप के घर में शादी है और तोहफ़ा में उनको "अच्छी बेटियां" (किताब) नहीं दिया,

तअज्जुब है!

अच्छी बेटियां

ACHCHI BETIYAN

लेखक:

उस्ताज़ुल कुर्रा वल हुफ़्फ़ाज़ हज़रत मौलाना

क़ारी मोहम्मद नसीम अहमद क़ादरी

लोहना, जनकपुर (नेपाल)

प्रकाशक

मदरसा फैज़ुन नबी नूरी मरकज़ी दारुल क़िरात, लोहना, जनकपुर नेपाल

क़ौम की शहज़ादियों के लिए अनमोल तोहफ़ा

अच्छी बेटियाँ

लेखक

उस्ताज़ुल कुर्रा वल हुफ़्फ़ाज़ हज़रत मौलाना

क़ारी मोहम्मद नसीम अहमद क़ादरी

मदरसा फैज़ुन नबी नूरी मरकज़ी दारुल क़िरात, लोहना, जनकपुर नेपाल

प्रकाशक

मदरसा फैज़ुन नबी नूरी मरकज़ी दारुल क़िरात, लोहना, जनकपुर नेपाल

सर्वाधिकार सुरक्षित

पुस्तक : अच्छी बेटियाँ

लेखक : उस्ताज़ुल कुर्रा वल हुफ़्फ़ाज़ हज़रत मौलाना
क़ारी मोहम्मद नसीम अहमद क़ादरी
मदरसा फैज़ुन नबी मरकज़ी दारुल क़िरात
लोहना, जनकपुर नेपाल

नज़रे सानी : मुफ़्ती मोहम्मद फिरोज़ूल क़ादरी मिस्बाही
मुफ़्ती ग़ुलाम जिलानी मिस्बाही अज़हरी, क़ारी मोहम्मद इश्तियाक़

एडिशन : Sep. 2020

प्रकाशक : मरकज़ी दारुल क़िरात, लोहना, जनकपुर नेपाल

संपर्क न॰

+9779804875986 नेपाली +919199595391 इंडियन

किताब मिलने के पते:

• मदरसतुल मदीना फैज़ाने मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द, परिहार • रज़ा बूक्डेपो परिहार • फैज़ी किताब घर सीतामढ़ी • दिनी किताब घर सीतामढ़ी • नूरी किताब घर सीतामढ़ी • जामिया इक़रा लिल्बनात सुरसंड • सुन्नी सेंटर ऑफ नेपाल, जामिया सुन्निया खंडवा एम पी • कुल्लिया फातिमातुज़्ज़हरा लिल्बनात जनकपुर 1 • जामिया बनातुल मुस्लिमीन पूल चौक जनकपुर 16 • जमियतुल मदीना लिल्बनात सिद्दिक़ चौक जनकपुर 16 • जामिया फातिमातुज़्ज़हरा दरभंगा बिहार

कुरान

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ

فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ

پارہ۹ سورۃ الانفال آیت ۲۸

तर्जुमा-ए-कंज़ुल ईमान : और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फित्ना है और अल्लाह के पास बड़ा सवाब है ।

हदीसे पाक

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया : जिस शख़्स की तीन बेटियाँ या तीन बहनें हों या दो बेटियाँ या दो बहनें हों, और वह उनके साथ बहुत अच्छे तरीक़े से ज़िंदगी गुज़ारे (यानी उनके जो हुकूक़ शरीयत ने मोक़र्रर फरमाए हैं वह अदा करे, उनके साथ एहसान और बेहतर सुलूक का मामला करे, उनके साथ अच्छा बरताऊ करे) और उनके हुकूक़ की अदाईगी के सिलसिले में अल्लाह तआला से डरता रहे तो अल्लाह तआला उसकी बदौलत उसको जन्नत में दाख़िल फरमाएगा ।

तिरमिज़ी शरीफ

प्रस्तावना

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

इस्लाम के अंदर औलाद की तालीम व तरबियत पर जिस क़दर ज़ोर दिया गया है और चीज़ों पर उसके मद्दे मुक़ाबिल बहुत कम है। औलाद की तरबियत और तालीम व तअल्लुम की अहमियत पर हमारे बड़ों ने बहुत सारी किताबें लिखी हैं। क़ुराने पाक की आयात और अहादीसे मुबारका इस ज़िमन में बेशुमार हैं लेकिन इस रिसाला में हम ने ख़ास कर बच्चियों की तालीम व तरबियत के लिए क़ुरान और अहादीस के मफ़हूम के साथ साथ अहले अक़्ल व दानिश के क़ौल के मजमूआ को इकट्ठा करने की कोशिश किया है ताकि माँ बाप अपनी बच्चियों की अच्छी तरबियत का ख़याल रखें। रही बात बच्चियों की अज़मत, उनकी क़दर व मंज़िलत तो इस बात को पूरी दुनिया जानती है कि इस्लाम से पहले इनका कोई मक़ाम न था, यह सिर्फ मर्द के लिए खिलौना समझी जाती थीं, ऐश व इशरत के सामान के अलावा इनका कोई मक़ाम व मनसब न था। बच्चियाँ ज़िंदा दरगूर करदी जाती थीं और बहुत सारे मज़ालिम इन पर ढाये जाते थे। न बाप की निगाह में कोई अज़मत थी न शौहर की निगाह में कोई वक़अत, न भाई के यहाँ कोई क़दर व मंज़िलत न बेटा के लिए यह क़ाबिले एहतेराम। मगर अल्लाह का लाख लाख शुक्र है हमारे नबी ﷺ की आमद आमद ने बेटियों को रहमत, बहनों को बरकत, बीवियों को नेमत और माँ के क़दमों तले जन्नत बताया फिर इनकी

क़दर व मंज़िलत का क्या कहना आज जिस घर में यह न हों वह घर बेरौनक़ है। इनकी क़दर व मंज़िलत के ऊपर सेकड़ों किताबें लिखी जाचुकी हैं। मगर इस्लाम ने जो मक़ाम व मंसब अता किया है न पहले किसी ने दिया न आने वाले वक़्त में कोई दे सकता है। आज कल आज़ादी के नाम पर इनको नंगा नचाना और ऐश व इशरत के नाम पर महफ़ूज़ जगह से बाहर निकाल कर इनको अपने हवस का शिकार बनाना यह इन पर एहसान और इनके हुक़ूक़ को अदा करना नहीं है बल्कि इन्हें लोभ लालच देकर धोका देना है, इन्हें बेआबरू करना है। लिहाज़ा बेटियों को चाहिए की वक़्त और हालात को पहचानें साथ ही साथ दोस्त और दुश्मन का परख भी अपने अंदर पैदा करें ताकि आपकी आबरू आपका वक़ार सलामत रह सके। अल्लाह पाक अपने प्यारे हबीब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल क़ौम की बेटियों को अक़्ले सलीम अता फरमाए, आमीन !

क़ौम की शहज़ादियों की अच्छी तालीम व तरबियत की ग़रज़ से इस मुख़तसर रिसाला को मुरत्तब किया गया है। अहले इल्म हज़रात की बारगाह में गुज़ारिश है कि अगर कहीं कमी बेशी नज़र आए तो खबर करें ताकि आइंदा एडिशन में शुक्रिया के साथ इसलाह की जा सके।

ज़रूरी नहीं कि बेटों से नाम रौशन हो
मेरे नबी का चला ख़ानदान बेटी से

मोहम्मद नसीम अहमद क़ादरी

ख़ादिम मदरसा फैज़ुन नबी नूरी मरकज़ी दारुल क़िरात

लोहना, जनकपुर नेपाल

बेटियों के लिए ज़रूरी हिदायात

- **हया :** छोटी बच्चियों को बचपन से हया करना, पर्दे में रहना सिखाएँ, अगर हया की चादर ओढ़ ली या माँ बाप ने उढ़ा दिया तो बचपन से बुढ़ापे तक हर हाल में उसकी आबरू और उसका वक़ार महफ़ूज़ रहेगा फिर दुनिया के साथ साथ आख़िरत में भी कामयाबी मिलेगी इन शा अल्लाह।
- छोटी बच्चियों को बचपन ही से अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की मोहब्बत और उसके अहकाम की पाबंदी सिखाएँ। अमल में कोताही पर अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिलाएँ।
- **इबादत :** छोटी बच्चियों में इबादत व रियाज़त का शौक़ पैदा करना चाहिए ताकि बालिग़ होने पर इबादत व रियाज़त में कोताही ना करें।
- **इस्तिक़ामत :** ताकि हालात चाहे जैसे हों लेकिन वह साबित क़दम रहे और अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ पर तवक्कुल (भरोसा) करें।
- **ज़ोहद फिद्दुनीया :** यानी दुनिया से दूरी और उसकी हिर्स व हवस से दिल ख़ाली रहे ताकि किसी के लालच में आ कर अपनी ज़िंदगी तबाह व बर्बाद ना करें।
- **आख़िरत की मोहब्बत :** ताकि दुनिया ना मिलने पर ग़म ना हो और आख़िरत पाने की ख़्वाहिश से अल्लाह की रज़ा पर राज़ी रहे।

- **ख़िदमत :** छोटी बच्चियों में ख़िदमत का जज़्बा पैदा करना चाहिए। यूं तो फ़ितरी तौर पर होता ही है बस ज़रा और उसको बढ़ा दें ताकि उसके ज़रिये माँ बाप के यहाँ और शादी के बाद शौहर के यहाँ हर किसी के दिल में अपना घर बना सके।
- **ज़िद :** छोटी बच्चियों को बचपन ही से ज़िद जैसी ख़तरनाक बीमारी से बचाएं, उसके अंदर ज़िद हरगिज़ ना आने दे फिर उसे सबर व शुक्र के साथ साथ ख़ुश रहना भी सिखाएँ।
- **लिबास :** बच्चियों के कपड़ों में भी यह ख़याल रखा जाए कि जानदार की तस्वीर न हो, ग़ैर मुस्लिमों के किसी शेआर की तस्वीर न हो, लड़कों के मुशाबा लड़की का लिबास न हो। याद रहे कि बच्ची ख़ुद मुकल्लफ नहीं लेकिन वालिदैन मुकल्लफ हैं। लिहाज़ा अगर वह ग़ैर इस्लामी लिबास पहनाते हैं तो उनसे अल्लाह तआला इस का मूआख़ज़ा करेगा। आज कल बच्चियों को फिल्मों, ड्रामों वाले लिबास पहनाए जाते हैं जोकि समाज में बच्चियों के साथ बढ़ती हुई ज़ियादती व दरिंदगी के असबाब में से एक यह भी शुमार होता है। जब बच्चियों में बचपन ही से इस तरह के लिबास की आदत दिलवाएँगे तो बड़ी हो कर हरगिज़ मोहज़्ज़ब लिबास पहनने को तैयार नहीं होंगी। अगर आप को अपनी बच्चियों से मोहब्बत है तो उनको बचपन ही से मगरबी लिबास से दूर रखें। ढीले ढाले मोहज़्ज़ब लिबास पहनने की आदत और कम से कम सिर

मोकम्मल ढाँपने की आदत डालें ताकि भेड़ियों के निगाहे बद और हवस का शिकार होने से बची रहें। मोहब्बत का यह सुबूत हरगिज़ नहीं कि आप बेटी की परवरिश नामोकम्मल महंगी लिबास पहना कर करते रहें और उसकी यह बुरी आदत बाद में आप को मुश्किल में डालने के साथ साथ आज़ाबे क़बर व हशर का सबब बने।

- **बच्चियों** को उरियाँ (अधूरा) लिबास और बेपरदगी के ख़तरात और उसके सबब से बच्चियों के साथ होने वाली ज़ियादतियों से आगाह करते रहें।
- **वह बच्चियाँ** जिनकी उम्र सात साल से कम होती है उनके लिए परदा नहीं लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उन्हें नंगा रखा जाये या दूसरे लोगों के सामने उन्हें कपड़े बदलवाए जाएँ या ग़ैर इस्लामी लिबास की आदत डाली जाये। बच्ची में बचपन ही से हया पैदा करने के लिए उसे न तो दूसरों के सामने कपड़े बदलवायें, न नहलाएँ, न नाफ़ से घुटनों तक के हिस्से में दूसरों के सामने दावा वग़ैरा लगाएँ ताकि उसे यह पता हो कि इस जगह को दूसरों के सामने नंगा करना बुरी बात है।
- **दौरे हाज़िर** में बच्चियों को फैशन कराना एक आम रिवाज बन चुका है। औरतों ने फितनों को ख़ुद इतना बढ़ा दिया है कि अल्लाह बचाए ! जब माँयें ब्युटिपालर से मेकअप करवा कर आती हैं तो वह अपनी सात आठ साल की बच्चियों को भी वहीं मेकअप करवाती हैं या बच्चियाँ मेकअप कराने की ज़िद्द करती हैं नतीजा यह कि पाँच पाँच

छह छह साल की बच्चियों के साथ दरिंदगी के वाक़ियात रुनमा हो रहे हैं। इस लिए फ़ितनों से बचने के लिए बच्चियों को सादा और मोहज़्ज़ब लिबास पहनाना चाहिए।

- **खेल-कूद** माँ बाप को चाहिए कि छोटी बच्चियों के खेल-कूद में भी निगरानी करें। क्यूँकि आज कल फिल्मों ड्रामों की फहश तस्वीरें कम उम्र की बच्चियों में भी अपना असर उतार चुकी हैं। इस लिए जहां तक मुमकिन हो माँ बाप अपनी बच्चियों को फिल्मों ड्रमों से दूर रखने के साथ ख़राब साथियों के साथ खेल-कूद की इजाज़त हरगिज़ न दें।

- **तालीम :** बच्चियों को तालीमे क़ुरान और अदब के साथ जहाँ तक हो सके अच्छी से अच्छी दीगर तालीम भी दिलवाएँ। बेटियों की तालीम किस क़दर ज़रूरी है बस इस से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि अहले अक़्ल कहते हैं कि अगर एक औरत तालीम याफ़्ता हो गई तो गोया कि एक क़बीला तालीम याफ़्ता हो गया। बच्चों का पहला मदरसा व स्कूल माँ की गोद है। बच्चे सब कुछ यानी अदब, अक़्ल, तदब्बुर सब वहीं सीखते हैं। लिहाज़ा बेटियों की तालीम का ख़ूब ख़याल रखें मगर ऐसी ख़लत मलत जगह से महफ़ूज़ रखें जहाँ बुराइयाँ आम हों।

ऐसी तालीम किस काम की जिस से फित्ना जनम ले और इज़्ज़त व आबरू महफ़ूज़ ना हो और बच्चियाँ कहीं मुंह दिखाने के क़ाबिल ना हो। उरियानी, फहशगोई, बदकारियाँ उनके ज़ेहन व दिमाग़ में आए तो ऐसी तालीम और ऐसी जगह से दूर रखें

वरना दुनिया व आख़िरत दोनों में माँ बाप की पकड़ होगी और सख़्त से सख़्त अज़ाब में गिरफ्तार होंगे।

- **ग़म गुसारी :** छोटी बच्चियों को ग़म गुसारी की तालीम दें ताकि अपने माँ बाप और रिश्तेदारों के ग़म को अपना ग़म समझे और उनके ग़म दूर करने और सबर करने में मददगार बन कर हर दिल अज़ीज़ रहे।

- माँ बाप को चाहिए कि बच्चियों के सामने किसी तरह की बे हयाई की बात या काम न करे। मसलन फहशगोई (बुरी बात बोलना) गाली गलोच, झगड़ा लड़ाई न करे। इस लिए कि ऐसा करने से आप की तरबियत बेअसर होगी और बच्चियों में यह आदत बआसानी जल्द आजाने का ख़तरा है।

- माँ बाप को चाहिए कि अपनी बच्चियों के सामने एक दूसरे को ताना न दे और एक दूसरे को ज़लील न करे बल्कि एक दूसरे की इज़्ज़त व क़दर करे ताकि बच्चियों की निगाह में माँ बाप की अज़मत बरक़रार रहे और उनकी तरबियत अच्छी से अच्छी हो सके।

- माँ बाप को चाहिए कि अपने किरदार को बच्चियों के सामने बहुत पाक और सुथरा रखे इस से आप की बच्चियों के किरदार भी आला (बुलंद) होंगे।

- **घरेलू काम :** माँ बाप को चाहिए कि छोटी बच्चियों से घर के कामों में मदद लें और बच्चियों को भी चाहिए कि घर के कामों में अपनी माँ का हाथ बटाए ताकि घरेलू काम काज

की आदत बने।

- माँ बाप की बात ख़ूब तवज्जो से सुने और किसी क़िस्म का मामला होतो माँ बाप के सिवा किसी को मालूम न होने दे।

बड़ी बच्चियों के लिए ख़ास हिदायात

✍ बड़ी बच्चियाँ अपना ख़ूब ख़याल रखें यानी साफ सुथरी रहें, कपड़ा मैला कुचैला न पहनें, बाल संवार कर रखें और दीगर तरीक़े से भी सफाई सुथराई का ख़याल रखें। इस से माँ बाप ख़ुश होते हैं और रहन सहन में वक़ार पैदा करें इस से ख़ानदान में और रिश्तादारों में उसकी इज़्ज़त बढ़ती है और शादी के पैग़ाम में भी दुश्वारियाँ नहीं होतीं और हर इज़्ज़तदार शख़्स ऐसी बच्चियों को अपने घर की ज़ीनत बना कर ख़ुशी महसूस करते हैं।

✍ बड़ी बच्चियों को चाहिए कि माँ बाप के साथ सिर्फ सच्च बोलें। झूठ कभी न बोलें ताकि अंजाने में दोस्तों यानी सहेलियों के बहकावे में कोई ग़लत काम होजाए या ग़लत बात होजाए तो माँ बाप उसका बेहतर हल निकाल सकें। बड़ी बच्चियाँ इस बात का ख़ास ख़याल रखें कि माँ बाप से बढ़ कर पूरी दुनिया में कोई भी आप का सच्चा हमदर्द नहीं हो सकता बल्कि तजरबा है कि माँ बाप बेटों से भी ज़्यादा बेटियों के हमदर्द होते हैं लिहाज़ा मामला चाहे कुछ भी हो आप उनके साथ सिर्फ सच बोलें अगरचे उनकी तरफ से ग़लती पर मामूली सज़ा का भी इमकान हो, उनकी बरवक़्त की तंबीह दुनिया की रुसवाई और आख़िरत के अज़ाब से

बचाएगी इन शा अल्लाह।

- बड़ी बच्चियाँ माँ बाप की क़दर व इज़्ज़त और उनकी ताज़ीम व तौक़ीर हर हाल में बजा लाएँ ताकि शादी के बाद माँ बाप के साथ साथ अपने शौहर और उनके माँ बाप और दीगर घर के अफराद की ताज़ीम व तौक़ीर करके उन सब की निगाह में अपनी क़दर व मंज़िलत हमेशा बढ़ाती रहें।
- बड़ी बच्चियाँ तमाम कामों पर अपने माँ बाप को तरजीह दें और उनके हुक्म को अल्लाह व रसूल के हुक्म के बाद हर हुक्म पर मुक़द्दम जानें और शादी के बाद अपने शौहर के हुक्म को सारे हुक्म पर तरजीह दें ताकि इस आदत से माँ बाप की आँखों का तारा बनी रहें और शादी के बाद शौहर के दिल की मलका बनी रहें।
- **ज़ुबान दराज़ी :** बड़ी बच्चियों को चाहिए कि घर में अपनी माँ और भाई बहनों और दीगर लोगों से ज़ुबान दराज़ी हरगिज़ न करें चूंकि ज़ुबान दराज़ी तमाम फित्नों की जड़ है और ज़ुबान दराज़ी से इंसान अक्सर ज़लील व रुसवा होता रहता है और यही बुरी आदत अक्सर बच्चियों को शादी के बाद शौहर और उनके घर वालों से जुदाई का सबब बनती है। यह ख़बीस आदत अगर आप नहीं छोड़ती हैं तो तलाक़ जैसी नौबत आ जाती है जो आप की ज़िंदगी के लिए मौत से बदत्तर पैग़ाम लाती है फिर बच्चियों का पूरा ख़ानदान और उसके शौहर का ख़ानदान मैदाने जंग के सिपाही बनते हैं और मामला कोर्ट तक पहुंचता है, वालिदैन (माँ बाप) और भाई

जेल तक की मुसीबत झेलते हैं और ज़िल्लत व रुसवाई दोनों ख़ानदान का मोक़द्दर बन जाता है। लिहाज़ा आप की नर्म मिज़ाजी और ज़ुबान दराज़ी न करना उन तमाम फित्नों के दरवाज़े को हमेशा के लिए बंद कर सकता है।

✍ **सख़्त मिज़ाजी :** बड़ी बच्चियों को चाहिए कि अपनी माँ के साथ और घर के दीगर अफराद के साथ सख़्त मिज़ाजी न दिखाएँ, यह बुरी ख़सलत माँ बाप के घर में और शादी के बाद शौहर के घर में उन्हें अकेला कर देता है। लोग ऐसी बच्चियों से दूर होने लगते हैं और उनके सेहत के लिए भी नुक़सानदेह साबित होता है और हुस्न के निखार को भी यक्सर ख़तम कर देता है।

तंबीह

हाँ ! बच्चियों को इस बात का ख़याल रखना चाहिए कि माँ बाप की ग़ैर मौजूदगी में अपने घर वालों के अलावा दूसरे के लिए सख़्त मिज़ाजी पेश करें और शादी के बाद शौहर के घर वाले और ख़ास रिश्तादारों के अलावा बज़ाहिर सख़्त मिज़ाजी ज़ाहिर करें कि कोई ग़लत बात या ग़लत काम की उम्मीद उनसे न रखे बल्कि बेटियाँ अपने माँ बाप और शौहर और उनके माँ बाप के अलावा दूसरे के लिए मिसले सूरज बन कर रहें कि कोई ग़लत निगाह से उसे देखने की हिम्मत न करे और उसकी हैबत (डर) से उसकी तरफ किसी ग़ैर की निगाह न उठे।

✍ **फरमाइश :** बड़ी बच्चियों को चाहिए कि फरमाइश की आदत अपने कंट्रोल में रखें बल्कि न के बराबर अपने

अंदर आने दें। तजरबा है कि माँ बाप उसकी ज़रूरतों का ख़याल रखते ही हैं, फरमाइश की फरावानी घर वालों की निगाह में और शादी के बाद शौहर की निगाह में बेवक़ार कर देती है लिहाज़ा बेजा (बेवजह) फरमाइश से अपने आप को महफ़ूज़ रखें।

- **ग़ुस्सा :** बड़ी बच्चियों को चाहिए कि ग़ुस्सा किसी भी मामला में हरगिज़ न करें क्यूँकि अहले अक़्ल कहते हैं कि ग़ुस्सा की इब्तिदा अक़्ल का ख़तम होना है और इंतिहा हमेशा की शरमिंदगी पर है।
- बड़ी बच्चियों को चाहिए कि अपने माँ बाप भाई बहन को छोटे छोटे तोहफे देती रहें इस से माँ बाप का दिल बहुत ख़ुश होता है और इस आदत को अपने अंदर बरक़रार रख कर शादी के बाद अपने शौहर को भी छोटे छोटे गिफ्ट देती रहें और उनके घर के अफराद को भी उनके मरातिब के लिहाज़ से और अपनी हैसियत के एतेबार से छोटे छोटे तोहफा देती रहें ताकि घर वालों में उसकी मोहब्बत और इज़्ज़त बढ़ती रहे।
- बड़ी बच्चियों को चाहिए कि अगर मोबाइल टेलीफ़ोन वग़ैरा पे बात करना चाहें तो माँ बाप के ख़ास और अज़ीज़ रिश्तादार के साथ बात चीत करें इस से माँ बाप को ख़ुशी होती है और शादी के बाद उनसे बात करें जिनसे शौहर बख़ुशी इजाज़त दें, और इस बात का ख़याल रखें कि उनके दोस्तों से इजाज़त के बावजूद भी हरगिज़ बात न करें ताकि शौहर की निगाह में आप का एतेमाद बरक़रार रहे और

आपकी पाकदामनी पे कोई हासीद (हसद करने वाला) या आपकी आबरू का कोई दुशमन उंगली न उठा सके।

ज़रूरी हिदायत

क़रीब क़रीब तमाम बड़ी बच्चियाँ मोबाइल से उठने वाले फित्नों को जानती हैं लिहाज़ा आप अपने आपको इस फित्ने से कैसे बचाएंगी यह आपके अक़्ल व दानिश के ऊपर है, मेरा नाक़िस मशवरा यह है कि मोबाइल से अपने आपको दूर रखें और सिर्फ ज़रूरतन इस्तेमाल करें और इसके फित्नों पर निगाह रखें और सब से बेहतर यह है कि अपने महरम (वह मर्द जिसे निकाह हराम है) और शौहर के अलावा अपने लिए मोबाइल का इस्तेमाल ज़हरे क़ातिल समझें।

- बड़ी बच्चियों को चाहिए कि अपनी ज़िंदगी का कोई बड़ा फैसला ख़ुद न करें बल्कि माँ बाप से मिल कर करें चाहे वह ऊंची तालीम का मसला हो या अपनी पसंद ना पसंद का, ख़ास कर पसंद की शादी का फैसला तो हरगिज़ न करें इस मामला में आपको सही मशवरा देने वालों की सख़्त ज़रूरत होती है और याद रखें आपको सही मशवरा माँ बाप से बढ़ कर कोई नहीं देसकता इस की वजह यह है कि आम तौर पर लड़कियां जज़बाती होती हैं और सिर्फ हाल को ही देखती हैं लेकिन माँ बाप माज़ी व हाल के साथ साथ मुस्तक़्बिल बल्कि अपनी बच्चियों की आने वाली नस्लों की अच्छाई व बुराई को भी देख रहे होते हैं। इस लिए दुनिया में अपने लिए उनका फैसला सब से अच्छा समझो और अपने फैसले के साथ साथ तमाम हमदर्दों के

फ़ैसले पे उनके फ़ैसला को तरजीह दो। इन शा अल्लाह आप हमेशा ख़ुश रहेंगी। अगर उनकी जानिब से कुछ कमी बेशी या आपके मिज़ाज के ख़िलाफ़ कुछ हो भी गया तो उनकी दुआ की बरकत से अल्लाह तआला आपको आपकी चाहत से कहीं ज़्यादा अता फरमाएगा। इस लिए कि हदीस पाक है माँ बाप की दुआ औलाद के हक़ में नबियों की दुआ की तरह होती है।

तंबीह

बड़ी बच्चियों को सोचना चाहिए कि वह चुड़ियाँ, दोपट्टा और दीगर सामान बग़ैर मशवरा के पसंद करने में धोका खा जाती हैं, इस बात को वह ख़ुद भी महसूस करती हैं इसी लिए वह मशवरा के बाद ही कुछ खरीदती हैं, तो अपनी ज़िंदगी का यह सब से बड़ा फैसला अपने सब से बड़े हमदर्द के मशवरा के बग़ैर हरगिज़ न करें। हाँ ! माँ बाप और दूसरे बड़ों के मशवरों में कमी हो तो उसे इंकार का मुकम्मल इख़्तियार है। ऐसा नहीं कि माँ बाप ग़लत कहें तो उस फैसला को मानना होगा बल्कि इस्लाम ने आपको क़बूल और इंकार का मुकम्मल इख़्तियार दिया है।

- बड़ी बच्चियों को चाहिए कि गाहे बगाहे अपने बचपन की बातें माँ बाप के साथ करती रहे इस से माँ बाप को ख़ुशी होती है।
- बड़ी बच्चियों को चाहिए कि घर का काम ख़ूब सलीक़ा से करना अपनी माँ से सीखें। जैसे खाना बनाना, घर की सफाई सुथराई, सामान को सलीक़ा से सजा कर रखना वग़ैरा वग़ैरा।
- बड़ी बच्चियों को चाहिए कि अपनी तमाम सहेलियों का तआरुफ़ (पहचान) अपनी माँ से ज़रूर करवाएँ ताकि माँ

आपकी सहेलियों से मुतमइन रहे। और अगर किसी में बुरी ख़सलत होतो उस से आपको आगाह करके उसकी सुहबत से आपको बचाए वरना वह आपके मुस्तक़्बिल के लिए बहुत नुक़सानदेह साबित हो सकती है।

- बड़ी बच्चियों का कभी कभी घर में माँ से बात बिगड़ जाती है तो बच्चियों को चाहिए कि वह अपनी माँ को मनाएँ ऐसा नहीं कि माँ उसको मनाएँ। बच्चियाँ अपने अंदर बदलाऊ लाएँ माँ के अंदर बदलाऊ लाने की कोशिश न करें और अगर ज़रूरत महसूस करें तो मौक़ा महल देख कर अदब और मोहब्बत के साथ प्यार से अपनी बात सही दलील के साथ उनके सामने पेश कर दें और फैसला उनके ज़िम्मा छोड़ दें, उनका फैसला वही होगा जिसमें आपकी भलाई होगी। इन शा अल्लाह।
- बड़ी बच्चियों को चाहिए कि कोई भी सुरते हाल हो अपनी माँ से बोलचाल कभी बंद ना करें और माँ की हर बात को ख़ास तवज्जो से सुनें और उसे ज़रूर मानें और बिगाड़ किसी भी क़िस्म का हो उसे फौरन ठीक करें फिर माँ बाप की बात को बार बार सोचें और उसमें अपने लिए भलाई ही का पहलू निकालें और अगर ज़ेहन कुछ फैसला न कर सके तो दिल में यही बात जमाएँ कि उन्होने जो कहा है उसमें हमारा फाइदा ही फाइदा है और उनके कहने के ख़िलाफ़ में हमारा नुक़सान ही नुक़सान है, तो इन शा अल्लाह कभी शैतान आप पर ग़ालिब नहीं आएगा और बुरी ख़सलत वाली सहेलियों से भी

कोई नुक़सान नहीं पहुंचेगा। इन शा अल्लाह।

- बड़ी बच्चियों को चाहिए कि मामला ख़तम हो जाने के बाद पुरानी बातें बीच में हरगिज़ न लाएँ वरना फिरसे दूरी बढ़ने और बिगाड़ जनम लेने का इमकान है।
- बड़ी बच्चियों को चाहिए कि अगर कोई उसको नज़र अंदाज़ करे तो उसको माफ करना सीखें ताकि माँ बाप के यहाँ और शादी के बाद शौहर के घर में बिगाड़ की सूरत पैदा न हो। अगर आपने माफ करने की आदत नहीं सीखा है तो उस से हसद और किना जैसी मुहलिक बीमारी आपके सिने में जनम लेने का ख़तरा है फिर चुग़ली और गिबत जैसी ख़बीस आदतें भी आसकती हैं फिर आपका घर जहन्नम का गढ़ा बन कर तबाह व बर्बाद हो जाएगा। हदीस में है बेहतर बदला माफ करना है।
- बड़ी बच्चियों को चाहिए कि अपना हर मामला अपने माँ बाप के साथ और अपने भाई बहन और शादी के बाद शौहर और उनके घर वालों के साथ ठीक रखें और कुछ गड़बड़ हो जाए तो ख़ुद ही ठीक करें किसी तीसरी पार्टी को बीच में न लाएँ इसमें आपकी ज़िंदगी के लिए बेहतरी ही बेहतरी है।
- बच्चियों की परवरिश और सही तरबियत पर हदीस में जगह जगह जन्नत की बशारत है।
- बच्चियों का दिल ख़ुश करना और उनकी ज़रूरतों का ख़याल रखना और मोहब्बत से पेश आकर ज़रूरत पूरी करदेना माँ बाप के लिए दुनिया में मुफ़लिसी से बचने का

एलाज है और आख़िरत में दोज़ख की आग से निजात भी।

नसीहत

एक बुज़ुर्ग बयान फरमाते हैं कि मैं ने एक शख़्स को मस्जिद के एक कोने में आह व ज़ारी के साथ गिड़गिड़ा कर आजज़ी से रो रो कर दुआ करते देखा। मैं ने दुआ के बाद वजह मालूम करने की कोशिश की तो उसने बताया कि मामला यह है कि मेरी छह 6 बच्चियाँ हैं फिर मेरी बीवी हामिला है तो मैं ने अपनी बीवी को बहुत सख़्त सुस्त कहना शुरू किया और बार बार धमकिया दिया करता था कि अगर अब की बार बच्ची हुई तो तुझे माइके भेज दूंगा, तो मैं एक रात ख़्वाब देखा कि क़यामत क़ाइम है मेरे आमाल के बदले दोज़ख़ की आग है, जब फरिश्ते मुझे दोज़ख़ के पहले दरवाज़े पर लेकर गए तो मैं ने देखा कि मेरी बड़ी बच्ची खड़ी है और उसने फरिश्ते से कहा कि मैं इसकी बच्ची हूँ, मेरा बाप बहुत दुश्वारीयां उठा कर मेरी परवरिश और तरबियत की लिहाज़ा मैं इसे नहीं ले जाने दूँगी। वहाँ से मुझे दूसरे दरवाज़े पर लाया गया, वहाँ मेरी दूसरी बच्ची मौजूद थी फिर इसी तरह के सवाल व जवाब हुए फिर तीसरे चौथे पांचवे छठे दरवाज़े पे छठी बच्ची ने रोक लिया फिर मेरी आँख खुल गई तब से मैं रो रो कर दुआ करता हूँ कि अल्लाह पाक मुझे एक और बच्ची अता करदे ताकि कल क़यामत के दिन मेरे आमाल

अगर काम न आसके तो इन बच्चियों की वजह से अल्लाह पाक दोज़ख़ से निजात अता फरमाए।

ज़रूरी तंबीह

मगर अफसोस सद अफसोस आज कल बेटे वालों की ख़ुबासत की वजह से लोग बच्चियों की पैदाइश पे ग़मगीन हो जाते हैं। हमें बच्चियों की ख़ातिर ग़म न करना चाहिए हदीस में आया है कि जब किसी के यहा बेटा पैदा होता है तो अल्लाह तआला फरमाता है जा अपने बाप की मदद कर और जब किसी के यहाँ बेटी पैदा होती है तो अल्लाह तआला फरमाता है जा मैं तेरे बाप की मदद करूंगा। तो आप ने यह पढ़ कर समझ लिया होगा कि बच्चियों के माँ बाप के साथ अल्लाह तआला की मदद है। अगर जहेज़ के नाम पर कोई भिकारी बेटी वालों से भिक मांगता है या जानवर समझ कर बेटा की क़ीमत वसूल करता है तो अल्लाह की लानत का मुस्तहिक़ हो जाता है और यह तजरबा है कि ऐसा बाप हमेशा परीशान और ज़लील व ख़ार होता है।

शादी ब्याह

इस्लाम ने निकाह की अदाईगी में जो क़ैद लगाया है वह सिर्फ इजाब व क़ूबूल है। निकाह मूनअक़िद होने के लिए जो शराइत हैं जब वह पाये जाएँ उसके बाद इजाब व क़ूबूल हो जाये शादी हो गई। अब अल्लाह तआला के प्यारे हबीब ﷺ ने

जितनी फ़ज़ीलत व अहमियत और लवाज़िमात इरशाद फरमाए हैं सब लागू हो गया। आज कल यह जो डकैतों की फौज लेकर भूके भेड़िये की तरह बेटी वालों के यहाँ हमला आवर होते हैं और उनकी खिदमत के लिए बेटी वाला जितना क़रज़ लेता है और जिस क़दर उनका दिल दुखता है फिर न चाह कर सिर्फ बेटी को ख़ुश देखने के लिए ख़ून के आंसु पी कर बेटा वालों के बदत्तमीज़ बारात को बरदाश्त करता है। इस से जिस क़दर बेटी वालों का दिल दुखेगा उतने ही अल्लाह तआला की नाराज़गी का सबब होगा। फिर मज़ीद यह कि बेटा वाला बेटी वालों पर मीठा और ख़ूबसूरत ज़ुल्म यह भी करता है कि सलामी के नाम पर अपने बेटा का दाम वसूल करता है, और वक़्त का अलमिया यह कि उस रक़म की अदाईगी के लिए बेटी वाला अपनी जाइदाद बल्कि बाज़ औक़ात घर तक सूद की अदाईगी में लगा देता है और बाज़ बेटी वाले भिक मांग मांग कर इंटरनेशनल भिकारी बेटे वाले को रूपिये देते हैं तब जा कर यह शादी करते हैं। याद रखें जब तक बेटी वालों को यह रूपिये वापिस कर के माफी न मांग ले तब तक अल्लाह पाक की नाराज़गी होगी और ऐसी शादी वाले निकाह की बरकत व फ़ज़ीलत से भी यक्सर महरूम ही होंगे। अल्लाह तआला हर बेटा वालों को अक़्ले सलीम अता फरमाए और बेटा के ज़रिये दुनिया व आख़िरत की नेमत और अल्लाह व रसूल की ख़ुश्नूदी कमाने की तौफ़ीक़ अता फरमाए, आमीन !

वलीमा

शादी के बाद दूल्हा के यहाँ वलीमा की दावत सुन्नत है। इसकी बड़ी अहमियत व फ़ज़ीलत है। दूल्हा को चाहिए कि वलीमा अपनी हैसियत के मुताबिक़ अपने घर करे, अपने दो़स्त व अहबाब और ख़ानदान व रिश्तादार की दावत करे कि यह एक कारे सवाब है मगर अफसोस आज कल कुछ कम नसीब दूल्हे का बाप इस क़दर ज़लील होता है कि वलीमा का ख़र्च भी बेचारे बेटी वालों ही से लेता है इसी वजह से पूरी ज़िंदगी यह तमाम बरकतों से महरूम हो कर दर बदर फिरता रहता है। अल्लाह तआला हमें निकाह की बरकत पाने वाली शादी की तौफ़ीक़ अता फरमाए, आमीन !

آمین یا رب العٰلمین بجاہ سید المرسلین وصلی

اللہ تعالٰی علی خیر خلقہ محمد و علی آلہ و صحبہ اجمعین

والحمد للہ رب العٰلمین

इस किताब का दूसरा हिस्सा

"पर्दा औरतों का मज़बूत क़िला"

ज़रूर मुताला करें।

तक़रीज़

फ़ाज़िले माक़ूलात व मनक़ूलात हज़रत अल्लामा मौलाना
मुफ़्ती ग़ुलाम जीलानी अज़हरी ख़लीफ़ा-ए-हुज़ूर ताजुश्शरिया
बानी जामिया सुन्निया व ताजुश्शरिया दारुल इफ्ता खंडवा एम पी

अल्हम्दुलिल्लाह ! मैंने इस किताब को हरफन हरफन पढ़ा, मुसन्निफ़ (मख़्दूमूल क़ुर्रा हज़रत क़ारी मो॰ नसीम अहमद क़ादरी साहब) ने मौज़ू के साथ इंसाफ किया है। तामीले بلغوا عنی و لو آیۃ में तहरीरन हो ख़्वाह तदरीसन मौसूफ़ अपना वजूद रखते हैं, मर्कज़ी दारुल क़िरात تعرف الاشجار بثمارھا के तेहत अपने फारेगीन हुफ़्फ़ाज़ व क़ुर्रा की शक्ल में अपने दाइरे में ऐसे ही मशहूर है जैसे अशरफ़ीया मिस्बाहीयों की शक्ल में जिसकी शहादत अग़यार भी देते हैं। अरबी का मशहूर जुमला है "الفضل ماشھدت بہ الاعداء" नूरी मर्कज़ी दारुल क़िरात को जो दूसरे एदारे से मुमताज़ करता है वह तज्वीद व तरतील की तालीम है जिसका एतेराफ़ मुख़ालेफ़ीन को भी है। अगर मैं अपनी बेटी को अच्छा बनाना चाहता हूँ तो मुझ पर फर्ज़ है कि शादी से पहले उसे यह किताब पढ़ाऊ ताकि वह शाद रहे। अल्लाह तआला एदारा साहिबे एदारा और रिसाला को क़ुबूले आम व ख़ास फरमाए। आमीन !

آمین بجاہ سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

मुफ़्ती ग़ुलाम जीलानी अज़हरी
बानी जामिया सुन्निया व ताजुश्शरिया दारुल इफ्ता
खंडवा एम॰पी॰

तक़रीज़

फ़ाज़िले जलील हज़रत **मुफ़्ती फिरोज़ुल क़ादरी मिस्बाही** साहब क़िबला बानी : जामिया नबविया अज़हरी महल्ला रामपुर मधवापुर मधुबनी बिहार
सदरे आला: अलफलाह एज़ुकेशनल एण्ड वेलफियर ट्रस्ट रामपुर

उस्ताज़े गिरामी उस्ताज़ुल क़ुर्रा वल हुफ़्फ़ाज़ हज़रत मौलाना हाफ़िज़ व क़ारी अल हाज क़ारी नसीम अहमद क़ादरी साहब क़िबला (ख़लीफ़ा हुज़ूर शेरे बिहार व मुहद्दीसे कबीर) नूरी मर्कज़ी दारुल क़िरात लोहना जनकपुर नेपाल का 32 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाला बनाम "अच्छी बेटियाँ" नज़र नवाज़ हुआ। शुरू से अख़ीर तक पढ़ा, यह सलेस उर्दू ज़बान में बच्चियों के लिए अनमोल तोहफा है। इस रिसाला की ख़ुसूसियत यह है कि इब्तिदाई उम्र से ही बच्चियों की तरबियत कैसे की जाये फिर बच्चियाँ जवान हो तो वह कैसे इफ़्फ़त मआब बन कर माँ बाप और शौहर के घर को जन्नत निशां बनाएँ, बच्चियाँ कैसे नेक सीरत और पाकीज़ा ख़यालात से आरासता हो कर समाज में बेहतरीन किरदार अदा करें इस पर मुकम्मल ज़ोर दिया गया है। इस लिए हर माँ बाप को चाहिए कि इस मुख़तसर रिसाला को अपनी बच्चियों को ज़रूर पढ़ाएँ।

बिला शुबहा क़ारी साहब क़िबला की हमेशा कोशिश रही है कि हर तबक़े के लिए काम करें और इस्लाम की सही तालीमात लोगों तक पहुंचाएं। इसी मिशन के तहत मदरसा फैज़ुन्नबी नूरी

मर्कज़ी दारुल क़िरात लोहना जनकपुर नेपाल वजूद में आया और इब्तिदाई ऐय्याम से ही नुमायां कारकरदगी का मुज़ाहिरा करते हुये हर हाल में तालीमी मेआर को न सिर्फ बहाल किया बल्कि फन्ने तज्वीद व क़िरात को मुल्के नेपाल में मुतआरफ करवाया और आज यह आलम है कि जो तलबा पहले फन्ने तज्वीद व क़िरात के हुसूल के लिए लखनऊ जैसे शहरों का रुख करते थे वह नूरी मर्कज़ी दारुल क़िरात लोहना जनकपुर नेपाल में अपनी इल्मी और फन्नी प्यास बुझा रहे हैं।

तालीमी मैदान में मुल्के नेपाल में नंबर एक का अवार्ड भी हासिल करने का शर्फ नूरी मर्कज़ी दारुल क़िरात को हासिल है। गुज़िशता कई सालों से हासिदीन की एक जमाअत ने एदारा नूरी मर्कज़ी दारुल क़िरात की तरफ मैली निगाह उठा रखी थी लेकिन अल्हम्दुलिल्लाह आज वह अपने इस गंदे हरकात पर पशीमाँ और शर्मिंदा हैं और एदारा अपने मिशन के साथ मंज़िल की तरफ रवां दवां है। यह मुख़्तसर रिसाला है इस लिए इख़्तिसारन चंद ही बातें तहरीर की गईं हैं।

इस से पहले भी फन्ने तज्वीद व क़िरात और आदाबे तिलावते क़ुरान के मौज़ू पर दो नायाब किताबें “मिरक़ातुल क़िरात” व “अरशूल जिनान फी तिलावतिल क़ुरान” क़ुबूले आम व ख़ास हो चुकी हैं और यह बात सुन कर मुझे बेहद ख़ुशी हुई कि लॉक डाउन में हज़रत मौसूफ़ क़िबला ने मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर तक़रीबन पंद्रह (15) रिसाइल मुरत्तब फरमाया है जो बहुत जल्द मंज़रे आम पर आएंगे। इन शा अल्लाह !

अल्लाह तआला इस रिसाला को और हज़रत क़ारी साहब क़िबला के जुमला मसाई-ए-जमीला को अपनी बारगाह में क़ुबूल फरमाए और मुसन्निफ़ क़िबला को दोनों जहान की सआदतें आता फरमाए आमीन !

آمین ثم آمین یارب العالمین بجاہ سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

फिरोज़ुल क़ादरी मिस्बाही
जामिया नबविया अज़हरी महल्ला रामपुर
मधवापुर मधुबनी बिहार

तक़रीज़

मुफ़क्किरे क़ौम व मिल्लत हज़रत अल्लामा मौलाना **मोहम्मद शहाबुद्दीन हनफी अत्तारी** साहब क़िबला मद्द ज़िल्लहुल आली सिमरदही नेपाल मुक़ीम हाल सऊदी अरब

ज़ेरे नज़र रिसाला-ए-नाफेआ ताम्मा बनाम "अच्छी बेटियाँ" मुताले की मेज़ पर मौजूद है जिसको फख़रुल क़ुर्रा उस्ताज़ुल हुफ़्फ़ाज़ पैकरे इख़लास व मोहब्बत नाज़िशे इल्म व अदब आलिमे बा अमल हज़रत हाफ़िज़ व क़ारी अल हाज मोहम्मद नसीम अहमद सिद्दीक़ी मद्द ज़िल्लहुल आली ख़लीफ़ा-ए-हुज़ूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन हुज़ूर सय्यद ज़ुहूरुल हुसैन साहब क़िबला ने बड़ी अर्क़ रेज़ि के साथ इस्लाम की मोक़द्दस शहज़ादियों के लिए तरतीब दिया है। यह उनके रुशहाते क़लम की पहली कड़ी नहीं बल्कि इस से पहले भी हज़रत क़ारी साहब क़िबला कई किताबें लिख चुके हैं ख़ास कर उनकी दो किताबें (मिर्क़ातुल क़िरात, अरशूल जिनान फी तिलवतिल क़ुरआन अल्मारूफ़ आदाबे तिलावाते क़ुरान) फन्ने क़िरात पर अज़ीम शाहकार हैं। हज़रत क़ारी साहब की यह तसनीफ भी अपनी मिसाल आप है। इस को बिलइस्तियाब पढ़ा, जिस हसीन अंदाज़ से और सलेस उर्दू में क़ारी साहब क़िबला नें इसको मुरत्तब किया है जिसको आम उर्दू ख़ाँ भी पढ़ लें यह उन्हीं का हिस्सा है, एक बेहतरीन मुसन्निफ़, मुअल्लिफ की यही पहचान है कि वह अपनी बात क़ारईन के दिल व दिमाग़ में उतार दें, आज कल उर्दू ज़बान

के साथ जो ज़ुल्म हो रहा है उसको हर ख़ास व आम जानते हैं ऐसे माहौल में सक़ील उर्दू लिख कर यह सोचना कि मेरी क़ाबलियत की धाक जमे यह ख़ाम ख़याली है। एक मुसन्निफ़ व मुरत्तीब के लिए ज़रूरी है कि वह क़ारईन के मिज़ाज को और हालात को समझें फिर इसी तनाज़ुर में वह अपनी बात आवाम व ख़वास तक पहुंचायें बहम्देहिल्लाही तआला हज़रत क़ारी साहब क़िबला के अंदर यह वस्फ़ व ख़ूबी बदरजा अतम मौजूद है कि वह अपनी बात ख़ाह वह तक़रीर के ज़रिये हो या तहरीर के ज़रिये लोगों के दिलों में उतार देते हैं।

अल्लाह तआला ने जहां हज़रत क़ारी साहब क़िबला को बहुत सारे औसाफ़े हमीदा व शमाइले अज़ीमा से नवाज़ा है वहीं आप मस्लके आला हज़रत के अज़ीम अलमबरदार हैं। हाज़िर जवाब मुनाज़िर हैं। आज से कई साल पहले मुल्के नेपाल में सल्फी मौलवीयों ने रियाल की बदौलत एक एफ़एम पर अहले सुन्नत व जमाअत के ख़िलाफ़ ज़हर उगलना शुरू किया, अक़ाइदे अहले सुन्नत को मजरूह और मस्लके आला हज़रत को बातिल साबित करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया, मामूलाते अहले सुन्नत पे हमला करने लगा, ऐसे हालात में अहले सुन्नत के उलमा व अवाम सख़्त बेचैन हुये कि इन नाम निहाद मुल्लावों का मुक़ाबला कैसे किया जाये कैसे इस पर नाकील कसा जाये कैसे इनका सद्दे बाब किया जाये उस वक़्त मुल्के नेपाल के दो अज़ीम मर्दे क़लंदर ने मस्लके आला हज़रत का अलम बुलंद किया और फिक्रे रज़ा की तरजुमानी की बल्कि जिन्होंने अहले सुन्नत को जिन्होने सर बुलंद किया उनमें सरे फ़िहरिस्त फ़क़ीहे आज़म

नेपाल मुनाज़ीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती उसमान बरकाती अल मारूफ़ हुज़ूर क़ाज़ी-ए-नेपाल और आप की ज़ाते गिरामी थी, आप ने फ़िर्क़हा-ए-बातीला के भेड़ियों को ऐसा दंदान शिकन जवाब दिया कि उनकी बोलती बंद हो गई । हज़रत क़िबला अक़्दस क़ारी साहब ने जिस मूदब्बीराना मुफ़क्किराना मुहक़्क़ीक़ाना और मुफ़स्सिराना अंदाज़ में उन बातिल जमाअत के ठेकेदारों का तआक़ुब किया यह भी उन्हें का ख़ास्सा था । बेशक आप का बयान दलाइल व बराहीन से मोज़ैयन व मुबरहन हुआ करता था जिसकी ताब ख़ीमा-ए-सलफ़ियत का कोई फर्द न ला सका और आप के दलाइल के सामने उसके बड़े बड़े एतेराज़ात के ऐसे पर्खच्चे उड़ते चले गए जैसे आँधी तूफान में बाज़ छतें उड़ती नज़र आती हैं । ज़ोमे बातिल में वह सोचते थे कि मैंने जो सवाल किया है उसका कोई जवाब न बन पड़ेगा मगर हज़रत क़ारी साहब क़िबला उसका जवाब इतनी आसानी से देते कि फ़िर्क़ा बातिला का गिरोह अंगुश्त बदंदाँ हो कर ख़ाइब व ख़ासिर हो जाता था जैसे एक क़वी पहलवान दुबला पतला पहलवान को पछाड़ कर ज़लील व ख़ार कर देता है । आप अपने एफ़एम के पोरोग्राम में जहां बातिल क़ुवतों का मुंह तोड़ जवाब दिया वहीं मुआशरे में फैली बुराइयाँ ख़ास कर अहले सुन्नत के अंदर जो बद आमालियाँ पाई जाती हैं उसका भी रद्दे बलीग़ किया और हक़ीक़ी इस्लाम व सुन्नियत का पैग़ाम आम किया जैसे माज़ाराते औलिया पर औरतों की हाज़िरी, ताज़िया दारी, जहेज़, शादी के मौक़ा पर बेबुनियाद रुसूमे बातिला का रद्द वग़ैरा वग़ैरा ।

रिसाला "अच्छी बेटियाँ" वाक़ई अच्छी बेटियों ही के लिए है मुझे उम्मीद है कि अगर बुरी बेटियाँ (जिनकी आदत बिगड़ चुकी है) भी इस को पढ़ेंगी तो अच्छी बेटी बन जाएंगी। रिसाला हाज़ा शरई अग़लात से पाक है हालाते हाज़िरा के तनाज़ुर में इस तरह आम फहम अंदाज़ में मुख़तसर रिसाले पम्फ़लेट शाई करने की अशद ज़रूरत है। हालात दिन बदिन नागुफ्ता बेह होते जारहे हैं जहां मर्द में बहुत सारी बुराइयाँ जनम ले चुकी हैं वहीं सिनफे नाज़ुक (ख़वातीन) में बहुत सारी गंदी आदतें फैशन उरियानियत तेज़ी से फ़ेल रही है इन सब जरासीम को रोकने के लिए सिनफे नाज़ुक को बाअख़लाक़ बनाने के लिए यह रिसाला तिरयाक़े आज़म और एक मुजर्रब अक्सीर साबित होगा। हर मुसलमान भाई बहन को चाहिए कि यह रिसाला ख़ुद भी पढ़ें और दीगर दोस्त अहबाब सहेली को भी तोहफा में इरसाल करें। मज़ीद क्या लिखूँ वक़्त की तंगी दामन गीर है बस मेरा अपना मानना है कि किसी भी तहरीर की इफ़ादियत व मक़्बूलियत मोहर्रिर की इफ़ादियत व मक़्बूलियत पर मुंहसिर है। मुसन्निफ़, मुरत्तीब जिस क़दर बाअसर शख्सियत होगी, जिस क़दर वह मोहतात होंगे उसी क़दर उनकी तहरीर की अहमियत अहले इल्म के नज़दीक होगी। माशा अल्लाह क़ारी साहब क़िबला अपनी दीनी ख़िदमात की वजह से मोहताजे तआरुफ़ नहीं हैं। अल्लाह तआला ने बहुत सारी ख़ूबियों से हज़रत मौसूफ़ को नवाज़ा है। इल्मे क़िरात को नेपाल में सब से पहले ख़ुसूसी तौर पर मुतआरफ करवाने वाले, इसको उरूज़ बख़्शने वाले बिला शुबहा हज़रत क़ारी साहब ही की ज़ात है आपने इल्मे क़िरात को फ़रोग़ देने के लिए 2008 में

एक अज़ीम एदारा बनाम "मदरसा फैज़ुन्नबी नूरी मर्कज़ी दारुल क़िरात" क़ाइम किया। चंद ही बरसों में यह एदारा मुल्के नेपाल का एक मुमताज़ एदारा हो गया। दूर दराज़ से तालिबाने उलूमे नुबूवत अपनी तिश्नगी बुझाने के लिए इस एदारे में ज़ेरे तालीम हुये, हिंदुस्तान के मुख़्तलिफ़ सूबों से तलबाये किराम इस एदारा से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। राक़ीमुस्सुतूर बहुत पहले से क़ारी साहब क़िबला के नाम से वाक़िफ़ तो था मगर कभी इनसे मुलाक़ात का शर्फ हासिल नहीं हुआ था। गुजिशता साल हुज़ूर शेरे नेपाल मुफ़्ती जैश मोहम्मद सिद्दीक़ी अलैहिर्रहमा के विसाल पर जनाज़े में शिरकत के लिए जब पहली बार लोहना शरीफ पहुंचा तो मर्कज़ी दारुल क़िरात ही में कुछ देर क़याम किया। चूंकि क़ारी साहब क़िबला से सनाशाई तो थी नहीं अलबत्ता उलमा के झुरमुट में बैठे शख़्सियत को पहचानने में देर तो होती नहीं। चारों तरफ से उलमा व क़ुर्रा हज़ारात आपको घेरे में लिए हुये थे इस से अंदाज़ा तो लग गया कि मर्कज़ी दारुल क़िरात के मर्कज़ी रूहे रवां यही शख़्सियत हैं। मेरे साथ मौलाना मुश्ताक़ अहमद सिद्दीक़ी साहब थे उन्होंने फरमाया यही हैं क़ारी नसीम साहब क़िबला बानिए एदारा। पहली बार हज़रत क़ारी साहब को देखा, बड़ी ही इंकेसारी, आजज़ी और मेहमान नवाज़ी जो भी लोग पंहुचे जिनको जानते हों उनको भी जिनको नहीं भी जानते उनको भी क़ारी साहब ने अपने एदारे में बिना चाए नाश्ता के वापिस होने नहीं दिया। बार बार फरमाते जो हज़रात दूर दराज़ से आयें हैं पहले नाश्ता वग़ैरा कर लें। यह कह सकते हैं कि हज़रत क़ारी साहब ने बाबे फ़ैयाज़ी को मेहमानों के लिए मोकम्मल तौर पर

खोल रखा था इस तरह हज़रत क़ारी साहब सिर्फ हाफिज़ व क़ारी ही नहीं एक फ़ैयाज़ शख़्सियत भी हैं। अल्लाह तआला ने आप को जिन जिन ख़ूबियों से नवाज़ा है अगर उन सब पर लिखा जाये तो एक किताबी शक्ल हो जाये। रब तआला हज़रत क़ारी साहब क़िबला की इस सई-ए-जमीला को क़ुबूले आम व ताम फरमाए, उनकी दीनी ख़िदमतों को अकनाफे आलम तक मुश्तहिर फरमाए और हासेदीन मुआनेदीन, ज़ालेमीन के शर व फ़ितन से महफ़ूज़ फरमाए और उनके इस रिसाला को मक़बूले दहर बनाए।

आख़िर में एक गुज़ारिश करके अपनी बात को ख़तम कर देता हूँ क़ारी साहब क़िबला ने जिस तरह बेटियों के लिए अच्छी बेटियाँ रक़म फरमाया है इसी तरह अच्छे बेटे के नाम से लड़कों के लिए भी कुछ न कुछ ज़रूर पंद व नसाएह पर मुश्तमिल रिसाला तहरीर फरमाए। मौला तआला आपकी हर नेक काविश को, दीनी ख़िदमात को क़ुबूले ताम फरमाए ! आमीन !

آمین بجاہ سید المرسلین وخاتم النبیین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

मोहम्मद शहाबुद्दीन हनफी अत्तारी
नाइब मोहतमिम : जामिया सैयदा फातिमा लिलबनात मीना बाज़ार
मुक़ीम हाल सऊदी अरब

Printed at: Ahmad Publications Pvt. Ltd. Patna @ 8521889323